7

लोगों के साथ विश्वास की मांग के अनुसार व्यवहार करना (2:1–13)

परमेश्वर के परिवार के लोगों का जीवन वैसा ही होना चाहिए जैसा वे कहते हैं कि उनका विश्वास है। मसीही लोगों को अपने जीवनों और अपने विश्वास में सम्बन्ध दिखाने के लिए याकूब एक टेस्ट देता है। वह आराधना में जाने वाले दो लोगों की तस्वीर दिखाता है, जिनमें एक धनवान है और दूसरा निर्धन है। वह पूछता है कि पाठक ध्यान दें और देखें कि दोनों के साथ कैसा व्यवहार होता है। दूसरे लोगों के साथ, चाहे हम उन्हें जानते नहीं होते, हमारा व्यवहार इस बात का संकेत देता है कि हम परमेश्वर पर क्या विश्वास रखते हैं। पिता के साथ अपनी संगति से हम अपने मानवीय सम्बन्धों को अलग नहीं कर सकते। यूहन्ना संक्षेप में कहता है, ''यदि कोई कहे, कि मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूं; और अपने भाई से बैर रखे; तो झूठा है: क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता'' (1 यूहन्ना 4:20)।

ताड़ना (2:1)

याकूब का सबक इस ताड़ना के साथ आरम्भ होता है: ''हे मेरे भाइयो, हमारे महिमायुक्त प्रभु यीशु का विश्वास तुम में पक्षपात के साथ न हो'' (2:1)। पत्री के आवश्यक स्वभाव की रेखा से मेल खाती, यह बात आज्ञा के रूप में पढ़ी जानी चाहिए। फिलिप्स में इसका अनुवाद है, ''हे मेरे भाइयो, हमारे महिमायुक्त प्रभु यीशु में विश्वास के साथ दम्भ को कभी मिलाने की कोशिश न करो।'' NEB में इसका अनुवाद है, ''मेरे भाइयो, यह मानते हुए कि जैसा तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह में करते हो, जो महिमा में राज करता है, कभी दम्भ न दिखाना।'' यह संस्करण कुछ अधिक अस्पष्ट हो सकता है, पर TEV का अनुवाद याकूब के अर्थ के काफ़ी निकट हो सकता है, ''मेरे भाइयो! हमारे प्रभु यीशु मसीह अर्थात महिमा के प्रभु में विश्वासियों के रूप में अपने जीवन में, तुम अपने बाहरी रूप के कारण अलग ढंगों से लोगों के साथ कभी व्यवहार न करना।''

अगली कई आयतों में हर बार इस आज्ञा को विस्तार मिलता है।

उदाहरण (2:2-4)

आयतें 2 से 4 मसीही लोगों की सभा में संचालन करने वालों के लिए नैतिकता की एक किस्म देती हैं। यह मानना सुरक्षित होगा कि आरम्भिक मसीही लोगों की सभाओं में लोग आते थे। याकूब ने ऐसे किसी व्यवहार को देखा होगा, जिसका उसने उल्लेख किया। याकूब न तो कहता है और न इससे कुछ फर्क पड़ता है कि आगंतुक मसीही है या गैर मसीही। दोनों ही

मामलों में दिखाया गया यह व्यवहार गलत है।

परन्तु याकूब हमें धनवान व्यक्ति के विषय में कुछ बताता है। उसने सोने की अंगूठी और मखमली वस्त्र पहने थे (आयत 2)। जिससे लगे कि वह कोई शाही व्यक्ति या चुना हुआ अधिकारी है। धनवान होने के अलावा वह शक्तिशाली व्यक्ति लगता है।

ये गुमराह भाई क्या सोच रहे थे? इन्हें क्या लगा कि मखमली वस्त्र अच्छे लोगों की पहचान, जबकि फटे पुराने कपड़े उन्हें पहनने वालों के चरित्र का ब्यान करते हैं? क्या उन्हें लगा कि किसी सम्पत्ति से यह पता चलता है कि वह कितना भला है? कोई भी कैसे मान सकता है कि यीशु को ''जाति-पाति'' स्वीकार्य होगी?

पहली सदी के मसीही लोगों पर अत्यधिक कठोर होने से पहले हम अपने आप से पूछ लें कि कहीं वैसे ही विचारों और कार्यों के दोषी, हम भी तो नहीं हैं। जिन लोगो ंको हम निकम्मे और बेकार समझते हैं यदि हमारी मण्डलियों पर उनका आना हो जाए तो हमारी क्या प्रतिक्रिया होगी। अपनी मण्डलियों के *किसी भी* आगन्तुक के साथ हम कैसे व्यवहार करते हैं? कुछ साल पहले डिक मार्सियर ने ''हाउ डू यू थिंक वी वुड रेट?'' नामक एक लेख लिखा था। इस लेख में कुछ स्तब्ध करने वाली जानकारी और निष्कर्ष थे।

> एक आदमी यह जानने के लिए कि कलीसियाएं वास्तव में कैसी लगती हैं, अलग-अलग रविवारों में 18 विभिन्न कलीसियाओं में गया। उस लेख के अनुसार जिसमें कहानी छपी थी, उस व्यक्ति ने कहा, ''मैं आगे जाकर बैठ गया। आराधना के बाद, मैं धीरे से पीछे को चला गया, फिर सबसे आगे निकलते हुए एक और रास्ते में से बीचों-बीच पीछे को चला गया। मैंने एक आदमी से मुझे एक विशेष जगह अर्थात संगति का कमरा, प्रचारक के अध्ययनकक्ष तक ले जाने को कहा।'' यह सोचकर कि कॉफ़ी मिलेगी मैं वहां बैठा रहा था। मैंने अपने स्वागत में होने वाली बातों को नापने के लिए एक पैमाने का इस्तेमाल किया।
>
> नापने की उसके अंक इस प्रकार थे:
>
> 2210-आराधक की मुस्कान के लिए
>
> 2210-पास बैठे व्यक्ति के अभिवादन के लिए
>
> 2100-नाम पूछने और बताने के लिए
>
> 2200-दोबारा आने के निमन्त्रण के लिए
>
> 1000-किसी दूसरे आराधक का परिचय कराने के लिए
>
> 2000-प्रचारक से मिलने के निमन्त्रण के लिए
>
> क्या आप जानना चाहेंगे कि उसे क्या पता चला? 18 कलीसियाओं में 11 कलीसियाओं को 100 अंकों से कम मिले और 5 ने 20 से भी कम अंक पाए। उसका निष्कर्ष था: ''डॉक्ट्रिन चाहे बाइबल की हो सकती है, गाना प्रेरणादायक हो सकता है, सरमन विश्वास बढ़ाने वाला हो सकता है; परन्तु किसी आगन्तुक को ऐसा कोई न मिले जिसे इस बात की परवाह हो कि वह वहां है, तो वह दोबारा वहां कभी नहीं जाएगा।''
>
> आपको क्या लगता है कि हमें कितने अंक मिलेंगे? यह इतना आवश्यक है कि हम

में से हर एक अगन्तुकों को यह अहसास दिलाने का भरपूर यत्न करे कि उनका स्वागत हुआ है, उन्हें सराहा गया है और उनकी ज़रूरत है। इस रविवार उन लोगों तक पहुंचने के लिए जिन्हें आप नहीं जानते विशेष प्रयास करें।

क्या याकूब हमसे भी उतना ही परेशान होता, जितना पहली सदी के उन मसीही लोगों से हुआ था, जो पक्षपात दिखा रहे थे?

पक्षपात का दिखावा इस बात का प्रमाण है कि हम अपने विश्वास को व्यवहार में नहीं ला रहे हैं। यीशु, जिसके पदचिह्नों पर हमें चलना है, ने पक्षपात नहीं दिखाया। आपको लगता है कि यदि यीशु फरीसियों को वही बताता जो उन्हें लगता था कि वे उसके हकदार हैं, तो वे यीशु को स्वीकार करते। यीशु बाहरी दिखावे से प्रभावित नहीं हुआ बल्कि मन के अन्दर झांकता था। यहां तक कि फरीसियों ने भी उसकी इस बात को माना जब उन्होंने कहा, ''तू सच्चा है; और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है; और किसी की परवाह नहीं करता, क्योंकि तू मनुष्यों का मुंह देखकर बातें नहीं करता'' (मत्ती 22:16)। इसी प्रकार यीशु सामाजिक रुतबे या धन से भी प्रभावित नहीं होता था। वह धनवान फरीसी के बजाय निर्धन विधवा से प्रभावित हो गया था। यीशु बाहरी बातों को पीछे करके पापियों के जीवन की क्षमता को देख सकता था। वह शमौन के अन्दर एक चट्टान को देख सकता था, जो कभी किसी को दिखाई नहीं दी। लोगों के ठुकराए हुए चुंगी लेने वाले मत्ती में उसने एक विश्वासयोग्य चेला देखा। कुएं पर आई स्त्री में, जिसके पापपूर्ण जीवन के कारण उसे समाज से निकाल दिया गया था, यीशु ने एक बड़ी फसल के माध्यम को देखा। यदि हम यीशु के पद चिह्नों पर चलना चाहें तो हमें इस बात को नज़रअन्दाज़ करके कि कोई व्यक्ति क्या है, यह देखना आवश्यक है कि वह क्या कर सकता है।

विस्तार (2:5)

पक्षपात गलत है क्योंकि यह परमेश्वर के व्यवहार से, विशेषकर निर्धन लोगों के प्रति उसके व्यवहार से मेल नहीं खाता (2:5, 6क)। याकूब पक्षपात पर अपनी शिक्षा को केवल धनवानों और निर्धनों तक सीमित नहीं कर रहा है, चाहे लगता है कि यह उसके समय की सबसे बड़ी मांग है। उसके पाठकों को यह समझना आवश्यक है कि नज़रअन्दाज़ किए जा रहे निर्धन व्यक्ति का परमेश्वर के मन में एक विशेष स्थान है। यह सम्भावना अधिक है कि निर्धन व्यक्ति सुसमाचार को ग्रहण करेगा क्योंकि वह इस संसार की वस्तुओं पर उतना निर्भर नहीं है। हमारे गलत व्यवहार के कारण वह उन लोगों के लिए जिनसे परमेश्वर प्रेम रखता है राज्य की विरासत को जानने से रोक रहे हो सकते हैं।

इस सब के अलावा, केवल यह विचार करें कि धनवान लोग मसीही लोगों से कैसे व्यवहार करते हैं (2:6ख, 7)। याकूब सब धनवानों को दोषी नहीं बना रहा या उन पर आरोप नहीं लगा रहा। वह केवल उनकी बात कर रहा है जिनके साथ उनका सम्बन्ध था। याकूब उनमें पाई जाने वाली तीन बुराइयों की बात करता है-मसीही लोगों का शोषण करना, उन्हें कचहरियों में घसीटना और यीशु के पवित्र नाम को बदनाम करना। इन पंक्तियों के बीच में याकूब पूछता है, ''संसार में तुम उन्हें पक्षपात क्यों दिखाते हो?''

याकूब ज़बर्दस्ती से अपनी बात को वापस ले आता है। वह उस बात का उदाहरण देता है जिसे वह शाही व्यवस्था कहता है: ''अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो।'' शाही व्यवस्था को लागू करते हुए वह संकेत देता है कि मसीही चरित्र की मूल परीक्षा दूसरों के साथ हमारे कार्य और व्यवहार की है।

''दूसरों के साथ सही व्यवहार करो'' कहना तो बहुत आसान है, पर इसे व्यवहार में लाना उतना ही कठिन। आमतौर पर दूसरे लोगों के साथ सही व्यवहार करने के और सूक्ष्म क्षेत्र हमारे लिए दिक्कत खड़ी करते हैं। हो सकता है कि हम खुलकर किसी व्यक्ति या समूह से पूर्वाग्रह से व्यवहार न करें, परन्तु हो सकता कि हम अपने साथ असहमत व्यक्ति की आलोचना कठोरता से करें।

हमारी ओर नुकीली गेंद फेंकता है, जिसे पकड़ना कठिन है: ''क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहरा'' (2:10)। ऐसा लगता है जैसे याकूब सवाल का अंदाज़ा लगा रहा है, ''पक्षपात दिखाने की बात पर इतना शोर क्यों?'' याकूब हमें दिखाना चाहता है कि कोई भी पाप जो परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन है, वह परमेश्वर के साथ संगति को तोड़ता है। यदि मैं परमेश्वर की सब आज्ञाओं का पालन करूं, परन्तु जान-बूझकर *एक* को तोड़ूं, तो मैंने उसके साथ संगति तोड़ दी है। हमारे इस संदर्भ में इसका अर्थ यह है कि यदि मैं काले, गोरे, मैक्सिकन, रूसी, एजी, ओकी लोगों को केवल इसलिए नापसन्द करूं कि वे काले, गोरे, मैक्सिकन, रूसी, एजीन या ओकी हैं, तो मैं अपने प्राण को ख़तरे में डाल रहा हूं। हत्या और व्यभिचार पर की गईं याकूब की टिप्पणियां (आयत 11) पक्षपात के गम्भीर स्वभाव को दिखाने के लिए हैं। आम तौर पर हम उन्हीं को बड़े पाप मानते हैं, पर याकूब हमें दिखाना चाहता है कि पक्षपात दिखाना भी वैसा ही पाप है।

स्पष्टतया यदि हम ''राज व्यवस्था'' को तोड़ें तो परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। क्योंकि परमेश्वर हमारी बातों, कामों तथा व्यवहारों का न्याय करेगा। इसलिए हमें इस प्रकार जीना आवश्यक है, जिससे परमेश्वर हम से प्रसन्न हो। आयत 13 में याकूब पहाड़ी उपदेश में से यीशु के शब्दों को सुनाता है कि दयावंत लोगों के ऊपर दया की जाएगी। हम में से कई लोग केवल दयावंत होने के अलावा सब कुछ हैं! परमेश्वर दया की तलाश में है, इसलिए हमें लोगों के प्रति अपने व्यवहार को बदलने की आवश्यकता है।

सारांश

जैसा हमारा विश्वास होगा वैसा ही हम चाहेंगे कि लोगों के साथ व्यवहार परमेश्वर की इच्छा के अनुसार किया जाए। इसका हमारे लिए महत्वपूर्ण होना बेहतर है क्योंकि यह परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण है।